अध्याय–9

परिकल्पनाओं के सॉख्यकीय परीक्षण

प्रस्तुत अध्याय; अध्ययनार्थ निर्मित परिकल्पनाओं के सॉख्यकीय परीक्षणों से प्राप्त निश्कर्शों पर आधारित है। षोधार्थिनी ने षोध हेतु निर्मित परिकल्पनाओं की सत्यता तथा सार्थकता के परीक्षण अध्ययन के दौरान के साथ–साथ विभिन्न सॉख्यकीय परीक्षणों **ख्यथाः** काई वर्ग परीक्षण **;r²द्ध,** सह–सम्बन्ध गुणॉक **;तद्ध** तथा असंगत/आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध,** की गणनाएं करके निश्कर्श स्थापित किए हैं, तत्पष्चात् षोध परिकल्पनाओं के निश्कर्शों की स्थापनाएं की हैं। उक्त सॉख्यकीय परीक्षणों के सूत्र, मानक मूल्य तथा संकेताक्षर विगत अध्याय 3 में दिए जा चुके हैं। षोध अध्ययन के लिए निर्मित समस्त दस परिकल्पनाओं की सत्यता व सार्थकता के सॉख्यकीय परीक्षण, उनकी गणनाएं तथा तत्सम्बन्धित निश्कर्श इस प्रकार हैंः–

भ्‌ रू ''सेवानिवृत्त महिलाओं की प्रस्थिति; उनके मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है।''

यह परिकल्पना अध्ययन के दौरान सत्य तथा सार्थक पायी गयी है। फिर भी षोधार्थिनी ने इस परिकल्पना की सत्यता व सार्थकता का मूल्यॉकन 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध** परीक्षण' से किया गया है क्योंकि सेवानिवृत्तों का अपने परिवारों के साथ सामंजस्य स्थापित 'आकस्मिक' ही नहीं हो जाता; अपितु परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सेवानिवृत्त को समय लगता है। इसलिए इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए आकस्मिकता/असंगत गुणॉक का परिकलन किया गया है–

तालिका नं. 9(1) : ''क्या सेवानिवृत्त महिलाओं की प्रस्थिति, उनके मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है?'' –सूचनादात्रिओं के अभिमत/प्रत्युत्तर

क्रम	सूचनादात्रीओं के अभिमत/प्रत्युत्तर	परिवारों के स्वरूप सापेक्ष आवृत्तियॉ		कुल योग
		संयुक्त	एकांकी	
1	''हॉ''	150।	75ठ	225
2	''नहीं''	58ब	117क	175
	समस्त	208	192	400

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक **;फद्ध त्र** (|क दृ ठब) / (|क. ठब) **त्र** (150 ग 117 दृ 75 ग 58) / (150 ग 117. 75 ग 58)

त्र (17550 दृ 4350) / (17550. 4350) **त्र** 13200 / 21900

त्र 0ण्6027 (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्श: चूॅकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक **(फ)**' का गणनात्मक मान (+)0.6027 उच्च कोटि का धनात्मक प्राप्त हुआ है जो कि उसके प्रामाणिक मूल्य (+)1 तथा (–)1 के मध्य है। अतः हमारी परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है।

भ्2 रू ''महिला प्रस्थिति एवं निर्णय निर्माण–प्रक्रिया में भागीदारी उत्तरोत्तर हासिये पर जा रही है।''

यह परिकल्पना भी अध्ययन के दौरान सत्य और सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने महिलाओं की प्रस्थिति और निर्णय लेने में भागीदारी के लिए कुछ न कुछ कारण उत्तरदायी अवष्य हैं, अतः उक्त स्थिति एवं उत्तरदायी कारणों के मध्य सह–सम्बन्ध स्थापित करने के लिए स्पीयर मैन की कोटिक्रम अन्तर विधि से सह–सम्बन्ध गुणॉक का परिकलन किया है; जो निम्नवत् है–

तालिका नं. 9(2) : सह–सम्बन्ध गुणाँक का परिकलन

क्रम	''क्या महिला प्रस्थिति एवं निर्णय निर्माण–प्रक्रिया में भागीदारी उत्तरोत्तर हासिये पर जा रही है?''	आवृत्तियाँ		पहली श्रेणी की रेंक द$_1$	दूसरी श्रेणी की रेंक द$_2$	कत्रद$_1$.द$_2$	क^2
		संयुक्त परिवार	एकांकी परिवार				
1	नहीं	——	——	——	——	——	——
2	हॉ, क्योंकि–						
	– परिजन उन्हें भार समझते हैं	56	40	2	3	(–)1	1
	– परिजन ऐषोराम से जीना चाहते हैं	102	90	1	1	0	0
	– पाष्चात्य संस्कृति का प्रभाव है	50	92	3	2	(+)1	1
	समस्त	208	192	–	–	–	∑क^{2}त्र2

स्पीयरमैन की कोटिक्रम अन्तर विधि से सह–सम्बन्ध गुणाँक का परिकलन :

सूत्र : सह–सम्बन्ध गुणाँक ;तद्ध त्र 1 दृ 6∑क^2 / छ;छ^2.1द्ध

त्र 1 दृ 6 ग 2 / 3ख्9 दृ1,

त्र 1 दृ 12 / 24

1
त्र 1 दृ .... त्र 1 दृ 0ण्5
2

त्र ;द्ध 0ण्5 (धनात्मक मान)

निश्कर्शः चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण 'सह–सम्बन्ध गुणॉक **(त)**' का गणनात्मक मान (+)0.5 पाया गया है जो धनात्मक है और सह– सम्बन्ध गुणॉक के प्रामाणिक मान (+)1 तथा (–)1 के मध्य होता है। अतः हमारी प्रस्तावित परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है कि महिला प्रस्थिति एवं निर्णय निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी उत्तरोत्तर हासिए पर आ रही है 'क्यों वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकीकरण के कारण परिवारों में व्यक्तिवादिता बढ़ी है, कर्ता की षक्ति का ह्रास हुआ है।'

भ्3 रू ''परिजन, सेवानिवृत्त महिलाओं को भार समझकर उनके साथ उदासीन तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते हैं।''

अध्ययन के दौरान यह परिकल्पना भी सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने इस परिकल्पना की सत्यता व सार्थकता का मूल्यॉकन 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध** परीक्षण' की गणना करके किया गया है क्योंकि उदासीन तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार; परिजनों द्वारा यों ही आकस्मिक रूप से आरम्भ नहीं कर दिया जाता बल्कि कुछ कारणोंवष तथा कुछ समयोपरान्त करना आरम्भ किया जाता है। अतः इस परिकल्पना के लिए यह परीक्षण लगाया गया है–

तालिका नं. 9(3) : ''क्या परिजन, सेवानिवृत्त महिलाओं को भार समझकर उनके साथ उदासीन तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते है?'' सूचनादात्रीओं के अभिमतों के आधार पर परिकलन

क्रम	सूचनादात्रीओं के अभिमत (प्रत्युत्तर)	परिवारों के स्वरूप सापेक्ष आवृत्तियॉ		कुल योग
		संयुक्त	एकांकी	
1	''हॉं''	160।	90ठ	250
2	''नहीं''	48ब्	102क	150
	समस्त	208	192	400

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक ;फद्ध त्र (।क दृ ठब्) / (।क. ठब्) त्र (160 ग 102 दृ 90 ग 48) / (160 ग 102. 90 ग 48)

त्र (16320 दृ 4320) / (16320. 4320) त्र 12000 / 20640

त्र 0ण्5814 (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्श: चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक (**फ**)' का गणनात्मक मान (+)0.5814 उच्च कोटि का प्राप्त हुआ है जो कि उसके मानक मूल्य (+)1 तथा (–)1 के मध्य है। अतः हमारी उक्त प्रस्तावित परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है।

भ्4 रू ''सेवानिवृत्त महिलाओं में मानसिक परिवर्तन होने से चिन्ताग्रस्तता बढ़ जाती हैं।''

अध्ययन के दौरान यह परिकल्पना सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने इस परिकल्पना का सॉख्यकीय परीक्षण किया है। चूँकि वृद्धावस्था में षारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होना स्वाभाविक है जिसकी बजह से चिन्ताग्रस्तता बढ़ जाती है; यह परिवर्तन व्यक्ति में आकस्मिक ही जनित नहीं होते; बल्कि षनैः षनैः जनित होते हैं अतः इस परिकल्पना की सत्यता तथा सार्थकता का सॉख्यकीय परीक्षण 'आकस्मिकता/असंगतता गुणॉक ;**फद्ध**' की गणना करके किया गया है।

तालिका नं. 9(4) : ''क्या सेवानिवृत्त महिलाओं में मानसिक परिवर्तन होने से चिन्ताग्रस्तता बढ़ जाती है?'' –सूचनादात्रीओं के अभिमतों के आधार पर आकस्मिकता/असंगत गुणाँक का परिकलन

क्रम	सूचनादात्रीओं के अभिमत (प्रत्युत्तर)	परिवारों के स्वरूप सापेक्ष आवृत्तियॉ		कुल योग
		संयुक्त	एकांकी	
1	''हाँ''	140।	92ठ	232
2	''नहीं''	68ब	100क	168
	समस्त	208	192	400

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक ;**फद्ध त्र** $\frac{\text{।क दृ ठब}}{\text{।क. ठब}}$ **त्र** $\frac{140 \text{ ग } 100 \text{ दृ } 92 \text{ ग } 68}{140 \text{ ग } 100.\ 92 \text{ ग } 68}$

त्र $\frac{14000 \text{ दृ } 6256}{14000.\ 6256}$ **त्र** $\frac{7744}{20256}$

त्र 0ण्3823 (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्श: चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक (**फ**)' का गणनात्मक मान (+)0.3823 पाया गया है जो कि उसके मानक मूल्य (+)1 तथा (–)1 के मध्य है; इससे स्पश्ट है कि वृद्धावस्था में षारीरिक–मानसिक परिवर्तन होने की बजह से सेवानिवृत्तों की चिन्ताग्रस्तता बढ़ जाती है। अस्तु हमारी प्रस्तावित परिकल्पना सत्य एवं सार्थक सिद्ध है।

भ्5 रू ''परिजन, सेवानिवृत्त महिलाओं के जीवन के अनुभवों का लाभ लेने में असमर्थ रहते हैं।''

यह परिकल्पना अध्ययन के दौरान सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने प्रामाणिक निश्कर्श स्थापित करने के लिए इस परिकल्पना की सत्यता व सार्थकता का मूल्यॉकन 'सह– सम्बन्ध गुणॉक **;तद्ध** सॉख्यकीय परीक्षण' द्वारा गणना करके किया है क्योंकि परिजनों द्वारा सेवानिवृत्त महिलाओं के जीवन के अनुभवों का लाभ न लेने के पीछे कुछ न कुछ कारण उत्तरदायी अवष्य होते हैं।

तालिका नं. 9(5) : ''क्या परिजन, सेवानिवृत्त महिलाओं के जीवन के अनुभवों का लाभ लेने में असमर्थ रहते हैं?'' सूचनादात्रीओं के अभिमतों (आवृत्तियों) एवं अनुभवों का लाभ न लेने के कारणों के मध्य सह–सम्बन्ध **;तद्ध** का परिकलन

क्रम	सूचनादात्रीओं के प्रत्युत्तर/अभिमत तथा अनुभवों का लाभ न लेने के कारण	परिवार (आवृत्तियाँ)		सह–सम्बन्ध की गणना			
		संयुक्त	एकांकी	द$_1$	द$_2$	कत्रद$_1$.द$_2$	क^2
1	नहीं	10	07	——	——	——	——
2	हॉ –	198	185	——	——	——	——
	– आपसी सामंजस्य का	190	171	1	1	0	0
	अभाव	103	115	3	4	(–)1	1
	– भौतिकवादी/व्यक्तिवादी	110	145	2	2	0	0
	संस्कृति	87	121	4	3	(+)1	1
	– उपेक्षा करना तथा नैराष्य						
	– सेवानिवृत्तों की षक्ति में						
	कमी						
	समस्त	208	192	–	–	–	∑क^{2}त्र2

;जीम जवजंस दनउइमत व ितिमुनमदबपमे पे उवतम जींद 100: कनम जव उनसजपचसम तमेचवदेमेद्ध

स्पीयरमैन कोटिक्रम अन्तर विधि से सह–सम्बन्ध गुणांक $\text{त्र } 1 \text{ दृ } \frac{6\sum \text{क}^2}{\text{छ;छ}^2\text{.1द्ध}}$

$\text{त्र } 1 \text{ दृ } \frac{6 \text{ ग } 2}{4\text{ग } 15}$

$\text{त्र } 1 \text{ दृ } \frac{1}{5} \text{ त्र } 1 \text{ दृ } 0\text{ण्}2$

$\text{त्र } 0\text{ण्}8$ (उच्च कोटि का धनात्मक)

निश्कर्शः चूॅकि सॉख्यकीय परीक्षण 'सह–सम्बन्ध गुणॉक (त)' का गणनात्मक मान 0.8 धनात्मक तथा अत्यन्त उच्च कोटि का प्राप्त हुआ है जो यह स्पश्ट करता है कि परिजनों

द्वारा सेवानिवृत्त महिलाओं के जीवन के अनुभवों का लाभ न लेने के पीछे विभिन्न कारण (उक्त तालिका में निर्दिश्ट) उत्तरदायी हैं; स्पश्टतः हमारी उक्त प्रस्तावित परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है।

भ्6 रू 'सेवानिवृत्त महिलाएं अधिक उम्र के कारण सामाजिक जीवन में स्वयं को निराष तथा उपेक्षित अनुभव करती हैं।'

अध्ययन के दौरान यह परिकल्पना सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने प्रामाणिक निश्कर्श निकालने हेतु इस परिकल्पना की सत्यता एवं सार्थकता का सॉख्यकीय परीक्षण करने के लिए 'काई वर्ग परीक्षण ;ग²द्ध' की गणना करके निश्कर्श स्थापित किया है, जो अग्रिम दो तालिकाओंः 10(6)क तथा 10(6)ख से स्पश्ट है–

तालिका नं. 9(6)क : काई स्क्वायर ;ग²द्ध के वास्तविक/प्रेक्षित मूल्य का परिकलन

क्रम	सेवानिवृत्त महिलाओं के सामाजिक जीवन में अधिक उम्र के कारण	सूचनादात्रीओं की संख्या (आवृत्ति)		कुल योग
		संयुक्त परिवार	एकांकी परिवार	
1	सेवानिवृत्त महिलाएं निराष व उपेक्षित अनुभव करती हैं	204_{01}	96_{02}	300
2	सेवानिवृत्त महिलाएं निराष व उपेक्षित अनुभव नहीं करती हैं	04_{03}	96_{04}	100
	समस्त	208	192	400

सूत्र : म त्र (म्‍ ग ब .... ळण्ज्) म1 त्र (208 ग 300 .... 400) त्र 156

म2 त्र (192 ग 300 .... 400) त्र 144

म3 त्र (208 ग 100 .... 400) त्र 52

म4 त्र (192 ग 100 .... 400) त्र 48

तालिका नं. 9(6)ख : काई स्क्वायर ;ग²द्ध के प्रत्याषित/परीक्षणात्मक मूल्य का परिकलन

क्रम	सामाजिक जीवन में अधिक उम्र के कारण	सूचनादात्रीओं की संख्या (आवृत्ति)		कुल योग
		संयुक्त परिवार	एकांकी परिवार	

1	सेवानिवृत्त महिलाएं निराष व उपेक्षित अनुभव करती हैं	156म1	144म2	300
2	सेवानिवृत्त महिलाएं निराष व उपेक्षित अनुभव नहीं करती हैं	52म3	48म4	100
	समस्त	208	192	400

;01 दृ म1द्ध2 ;02 दृ म2द्ध2 ;03 दृ म3द्ध2 ;04 दृ म4द्ध2
सूत्रः काई स्क्वायर ;ग2द्ध त्र दृ .... दृ .... दृ .... दृ ....
म1 म2 म3 म4

;204 दृ156द्ध2 ;96दृ144द्ध2 ;4 दृ 52द्ध2 ;96 दृ 48द्ध2
त्र दृ .... दृ .... दृ .... दृ ....
156 144 52 48

;48द्ध2 ;दृ48द्ध2 ;दृ48द्ध2 ;48द्ध2
त्र दृ .... दृ .... दृ .... दृ ....
156 144 52 48

त्र दृ 14ण्7692 दृ 16 दृ 44ण्3077 दृ 48

त्र दृ ख 14ण्7692. 16 . 44ण्3077. 48 ,

त्र ; दृ द्ध 123ण्0769 (ऋणात्मक मान)

निश्कर्शः चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण ‘काई वर्ग परीक्षण ;ग2द्ध’ का परीक्षणात्मक मान (–)123. 0769, **कण्;1द्ध** का .05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग परीक्षण के प्रामाणिक तालिका मान 3. 841 से काफी कम है; अतः हमारी प्रस्तावित परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है।

भ7 रू ‘‘आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति तथा तेजी के साथ बदलता सामाजिक परिवेष सेवानिवृत्तों के लिए विभिन्न समस्याएं जनित कर रहा है।’’

यह परिकल्पना अध्ययन में सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने इस परिकल्पना की सत्यता एवं सार्थकता की प्रामाणिकता का परीक्षण करने के लिए सॉख्यकीय परीक्षण ‘असंगत/ आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध**’ का परिकलन किया गया है क्योंकि संस्कृति तथा समाज कभी आकस्मिक नहीं बदलते। अर्थात् बदलाव षनैः षनैः आता है। अब परिवेष परम्परागत से आधुनिक व भौतिकतावादी हो चुका है इसलिए षोधार्थिनी ने आकस्मिकता गुणॉक का परिकलन किया है।

तालिका नं. 9(7) : ‘‘क्या आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति तथा तेजी के साथ बदलता सामाजिक परिवेष सेवानिवृत्तों के लिए विभिन्न समस्याएं जनित कर रहा है?’’ –सूचनादात्रीओं के अभिमतों के आधार पर आकस्मिकता/असंगत गुणॉक **;फद्ध** का परिकलन

क्रम	सूचनादात्रीओं के अभिमत (प्रत्युत्तर)	परिवारों के स्वरूप सापेक्ष आवृत्तियॉ		कुल योग
		संयुक्त	एकांकी	
1	‘‘हॉं’’	125।	92ठ	217

2	''नहीं''	83ढ	100क	183
	कुल योग	208	192	400

|क दृ ठढ 125 ग 100 दृ 92 ग 83

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक ;फद्ध त्र .... त्र ....

|क. ठढ 125 ग 100. 92 ग 83

12500 दृ 7636 4864

त्र .... त्र ....

12500. 7636 20136

त्र 0ण्2416 (धनात्मक मान)

निश्कर्शः चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक (**फ**)' का गणनात्मक मान (+)0.2416 प्राप्त हुआ है जो उसके मानक मूल्य (+)1 तथा (–)1 के मध्य है; अतः हमारी उपरोक्त प्रस्तावित परिकल्पना सत्य एवं सार्थक सिद्ध है।

भ्8 रू ''सुख षान्ति तथा उनके अनुभवों का लाभ लेने के लिए परिवार में सेवानिवृत्त महिलाओं का समन्वय आवष्यक हैं।''

अध्ययन के दौरान यह परिकल्पना सत्य तथा सार्थक पायी गयी है फिर भी षोधार्थिनी ने सॉख्यकीय परीक्षण की गणना करके प्रामाणिकता परखने का प्रयास किया है। चूँकि सेवानिवृत्त महिलाओं का परिवार में समन्वय (सामंजस्य) आकस्मिक ही नहीं हो जाता है, अतः इस परिकल्पना की सत्यता तथा सार्थकता परखने के लिए आकस्मिकता/असंगत गुणॉक **;फद्ध** का परिकलन सेवानिवृत्तों के परिवारों के स्वरूपों के सापेक्ष किया गया है।

तालिका नं. 9(8) : ''क्या सेवानिवृत्त व्यक्तियों के लिए सुख षान्ति तथा उनके अनुभवों का लाभ लेने के लिए परिवार में उनका समन्वय आवष्यक है?''

क्रम	सूचनादात्रीओं के अभिमत (प्रत्युत्तर)	परिवारों के स्वरूपों के सापेक्ष आवृत्तियॉ		कुल योग
		संयुक्त	एकांकी	
1	''हॉं''	180|	120ठ	300
2	''नहीं''	28ढ	72क	100
	समस्त	208	192	400

|क दृ ठढ 180 ग 72 दृ 120 ग 28

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक ;फद्ध त्र .... त्र ....

|क. ठढ 180 ग 72. 120 ग 28

12960 दृ 3360 9600

त्र .... त्र ....

12960. 3360 16320

त्र 0ण्5882 (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्शः चूँकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक (**फ**)' का गणनात्मक मान (+)0.5882 उच्च कोटि का प्राप्त हुआ है जो उसके मानक मूल्य (+)1 तथा (–)1 के मध्य है; अतः हमारी उपरोक्त प्रस्तावित परिकल्पना सत्य एवं सार्थक सिद्ध है।

भ्9 रू ''वर्तमान में अधिकाँषतः महिलाएं, सेवानिवृत्ति के पष्चात् पारिवारिक समायोजन में असफल होती दिखती हैं।''

यह परिकल्पना अध्ययन के दौरान सत्य तथा सार्थक पायी गयी है। फिर भी षोधार्थिनी ने परिकल्पना की सत्यता व सार्थकता परखने के लिए सॉख्यकीय परीक्षण 'सह–सम्बन्ध गुणॉक **;तद्ध**' का परिकलन करके सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के अभिमतों तथा पारिवारिक समायोजन में असफलता के लिए उत्तरदायी सम्बन्धित कारणों के मध्य सह–सम्बन्ध **;ब्व.तमसंजपवदद्ध** ज्ञात किया है। जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं. 9(9) : ''क्या अधिकाँषतः महिलाएं; सेवानिवृत्ति के पष्चात् पारिवारिक समायोजन में असफल होती दिखती है?– सेवानिवृत्तों के अभिमत

क्रम	सेवानिवृत्तों के अभिमत तथा समायोजन में असफलता सम्बन्धी उत्तरदायी कारण	परिवार तथा महिलाएं		सह–सम्बन्ध की गणना			
		संयुक्त	एकांकी	द1	द2	कत्रद1.द2	क2
1	नहीं	12	08	––	––	––	––
2	हॉ –	196	184	––	––	––	––
	– परिवार की आय में कमी आ जाना	45	40	2	2	0	––
		70	60	1	1	0	0
	– मानसिक सन्तुश्टि नहीं होना	30	25	3	3	0	0
	– आवष्यकताओं व आकांक्षाओं की पूर्ति न हो पाना	26	24	4	5	(–)1	0
	– षारीरिक अक्षमता के कारण सहयोग न कर पाना	25	35	5	4	(+)1	1
	– प्रस्थितिक परिवर्तन हो जाना						
	समस्त	208	192	–	–	–	∑क2त्र2

स्पीयरमैन की कोटिक्रम अन्तर विधि से सह–सम्बन्ध गुणॉक का परिकलन :

सूत्रः सह–सम्बन्ध गुणाँक त्र 1 दृ 6∑क2 / छ;छ2.1द्ध

त्र 1 दृ 6 ग 2 / 5;25 दृ 1द्ध

12 1
त्र 1 दृ .... त्र 1 दृ ...... त्र 1 दृ 0ण्1
120 10

त्र 0ण्9 (उच्च कोटि का धनात्मक)

निश्कर्श : चूँकि सॉख्यकीण परीक्षण 'सह–सम्बन्ध गुणॉक (**त**)' का गणनात्मक मान अत्यन्त उच्च कोटि का (+)0.9 पाया गया है जो यह स्पश्ट करता है कि सेवानिवृत्त महिलाओं की पारिवारिक समायोजन में असफलता तथा तालिका में निर्दिश्ट कारणों के मध्य अत्यन्त घनिश्ठ सम्बन्ध है; साथ ही सह–सम्बन्ध का यह गणनात्मक मान उसके प्रमाणिक मान (+)1 तथा (–)1 के मध्य है, अतः हमारी प्रस्तावित परिकल्पना सत्य व सार्थक सिद्ध है कि 'अधिकॉषतः सेवानिवृत्त महिलाएं सेवानिवृत्ति के पष्चात् पारिवारिक समायोजन में असफल होती दिखती हैं।'

$ᵸ_{10}$ रू ''अधिकाँषतः सेवानिवृत्त महिलाएं; महिला वृद्धाश्रमों की आवष्यकता पर बल देती हैं।''

षोधार्थिनी ने अध्ययन के दौरान यह परिकल्पना सत्य तथा सार्थक पायी गयी हैं वयोवृद्ध सेवानिवृत्त महिलाएं जो अपने परिवार में सामंजस्य नहीं कर सकी हैं उन्होंने प्रायः वृद्धाश्रमों को घर से उचित बताया; और कहा कि वर्तमान विशम परिस्थितियों में वृद्धाश्रमों की आवष्यता है। बहू–बेटे, नाती–पोते अन्य परिजन भी न कहना मानते हैं, न इज्जत देते हैं, न हमें पूछते हैं, न परामर्ष लेते हैं, कभी–कभी डॉट भी देते हैं, अब हम षारीरिक रूप से अक्षम, अषक्त हैं, घर की मदद नहीं कर पाते। पेंषन ना काफी है, बीमारी के कारण उपचार हेतु भी परिवार पर निर्भर रहना पड़ता है; सभी परिजनों का सभी चीजों (जरूरतों) के लिए मुँह ताकना पड़ता है; परिवार अब अपना नहीं रह गया है, इसलिए षेश जीवनयापन के लिए वृद्धाश्रम 'घर' से बेहतर हैं। षोधार्थिनी ने इस उक्त परिकल्पना की सत्यता व सार्थकता परखने के लिए सॉख्यकीय परीक्षण 'आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध**' की गणना करके परिकल्पना का परीक्षण किया है ताकि वैज्ञानिक तौर पर परीक्षण सम्भव हो सके। आकस्मिकता गुणॉक की गणना तथा परीक्षण निश्कर्श निम्न प्रकार है–

तालिका नं. 9(10) : ''क्या सेवानिवृत्त महिलाएं, महिला वृद्धाश्रमों की जरूरत महसूस करती हैं?''
–सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमत

क्रम	''क्या सेवानिवृत्त महिलाएं, महिला वृद्धाश्रमों की जरूरत महसूस करती हैं?'' –सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमत / प्रत्युत्तर	परिवार तथा महिलाएं		समस्त
		संयुक्त	एकांकी	
1	''हाँ''	160।	92ठ	252

2	''नहीं''	48_{C}	100_{D}	148
	समस्त	208	192	400

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक $(Q) = \frac{AD - BC}{AD + BC} = \frac{160 \times 100 - 92 \times 48}{160 \times 100 + 92 \times 48}$

$= \frac{16000 - 4416}{16000 + 4416} = \frac{11584}{20416}$

$= 0.5674$ (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्शः चूॅकि सॉख्यकीय परीक्षण 'असंगत/आकस्मिकता गुणॉक (**फ**)' का गणनात्मक मान (+)0.5674 उच्च कोटि का प्राप्त हुआ है जो उसके प्रामाणिक मान (+)1 तथा (–)1 के मध्य है; अतः प्रस्तावित परिकल्पना सत्य तथा सार्थक सिद्ध है कि 'सेवानिवृत्त महिलाएं; महिला वृद्धाश्रमों की आवष्यकता पर बल देती हैं।'

अग्रॉकित तालिका अध्ययनार्थ निर्मित विभिन्न षोध परिकल्पनाओं के सॉख्यकीय परीक्षण; लगाए गए परीक्षण तथा प्राप्त तत्सम्बन्धित निश्कर्शों पर संक्षिप्त प्रकाष (एक विहंगम दृश्टि) डालती है–

<u>अध्ययनार्थ निर्मित षोध परिकल्पनाओं के सॉंख्यकीय परीक्षण : एक विहंगम दृश्टि में</u>

क्रमांक	*परीक्षणार्थ निर्मित परिकल्पना जो निर्मित की गयी*	*सॉंख्यकीय परीक्षण जो लगाया गया*	*निश्कर्श*
1	H_1 : ''सेवानिवृत्त महिलाओं की प्रस्थिति उनके परिवार की साथ मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है।''	असंगत/आकस्मिकता गुणॉंक (Q)	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
2	H_2 : ''महिला प्रस्थिति एवं निर्णय निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी उत्तरोत्तर हासिए पर जा रही है।''	सह सम्बन्ध गुणॉंक (r)	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
3	H_3 : ''परिजन सेवानिवृत्त महिलाओं को भार समझकर उनके साथ उदासीन तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते हैं।''	असंगत/आकस्मिकता गुणॉंक (Q)	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी

4	भ्$_4$ रू ''सेवानिवृत्त व्यक्तियों में षारीरिक व मानसिक परिवर्तन होने से चिन्ताग्रस्तता बढ़ जाती है।''	असंगत/आकस्मिकता गुणाँक ;फद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
5	भ्$_5$ रू ''परिजन, सेवानिवृत्त व्यक्तियों के अनुभवों का लाभ लेने में असमर्थ रहते हैं।''	सह सम्बन्ध गुणाँक ;तद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
6	भ्$_6$ रू ''सेवानिवृत्त व्यक्ति अधिक उम्र के कारण सामाजिक जीवन में स्वयं को निराष तथा उपेक्षित अनुभव करते हैं।''	काई स्क्वायर ;ग्^{2}द्ध परीक्षण	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
7	भ्$_7$ रू ''आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति तथा तेजी के साथ बदलता सामाजिक परिवेष सेवानिवृत्तों के लिए विभिन्न समस्याएं जनित कर रहा है।''	असंगत/आकस्मिकता गुणाँक ;फद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
8	भ्$_8$ रू ''सुख षान्ति तथा उनके अनुभवों का लाभ लेने के लिए परिवार में सेवानिवृत्त महिलाओं का समन्वय आवष्यक है।''	असंगत/आकस्मिकता गुणाँक ;फद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
9	भ्$_9$ रू ''अधिकाँषतः महिलाएं सेवानिवृत्त के पष्चात् पारिवारिक समायोजन में असमर्थ रहती हैं। ''	सह सम्बन्ध गुणाँक ;तद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी
10	भ्$_{10}$ रू ''सेवानिवृत्त महिलाएं, महिला वृद्धाश्रमों की आवष्यकता पर बल देती हैं।''	असंगत/आकस्मिकता गुणाँक ;फद्ध	परिकल्पना सत्य व सार्थक पायी गयी

परिकल्पनाओं के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि जो परिकल्पनाएं अध्ययन के दौरान सत्य तथा सार्थक पायी जाती हैं, उन्हें सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर लिया जाता है, और जो परिकल्पनाएं अध्ययन में असत्य व निरर्थक पायी जाती हैं उन्हें व्यर्थ मानकर छोड़ दिया जाता है। सत्य व सार्थक परिकल्पनाएं षून्य परिकल्पना **;छनसस भ्लचवजीमेपेद्ध** या कार्यकारी परिकल्पना ॅ**;वतापदह भ्लचवजीमेपेद्ध** कहलाती हैं। उक्त सभी परिकल्पनाएं सत्य व सार्थक सिद्ध हुई हैं अतः इन्हें सिद्धान्त रूप में स्वीकार किया जाता है।

KKKKKK